पुरोवाक्

यह तो सर्वविदित है कि मानव स्वभावतः सामाजिक प्राणी है। उसका संबन्ध कई आयामों - प्रकृति, कला, विज्ञान, इतिहास, धर्म आदि से सदा ही रहा है। व्यक्ति, समाज और साहित्य तीनों अन्योन्याश्रित हैं। मानव समाज उसके प्रारंभिक चरण से लेकर अनेक प्रकार के स्तरीकरणों से युक्त होकर गतिशील रहा है। परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है। व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबन्धों के आधार पर हुए साहित्यानुशीलन को जो नया दिशा बोध आजकल मिल रहा है, वह पूर्वाधिक समादृ होने लगा है। सामाजिक यथार्थ को संवेदना के स्तर पर अभिव्यक्ति देने में कथा साहित्य की जो क्षमता है, वह अन्य साहित्यिक विधाओं में दुर्लभ - सी है। कहना न होगा कि हिन्दी कथा साहित्य भी अपनी विकास-यात्रा में तिलस्मी, ऐय्यारी आदि स्तरों को पार करके वास्तविक जीवन की ठोस धरती पर प्रतिष्ठित होकर गतिशील है। इस दौर में महिला कथाकारों के प्रदेय को नज़रन्दाज़ करना युक्तिसंगत नहीं होगा। अध्ययन काल से ही सुश्री मन्नू भंडारी जी की रचनाशीलता पर मेरी विशेष तत्परता रही है। मन्नू जी की, 'आपका बंटी' उपन्यास, 'यही सच है' जैसी रचनाओं को पढ़ते हुए मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि उनमें पचासोत्तर भारतीय परिवेश को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। वैसे साहित्य समाज का दर्पण है वाली उक्ति को स्पष्टीकरण देने का प्रयास हर युग के साहित्यकार करते रहते हैं। वर्षों पहले पढ़ी हुई इन रचनाओं का असर हृदय की गहराई तक शायद पैठ गया हो कि बदलते भारतीय समाज पर शोध करने की विशेष रुचि जब मन में पैदा हुई तो यह विचार उठा कि मन्नू भंडारी की रचनाओं में तो ऐसी पर्याप्त सामग्री हैं, जो बदलते हुए भारतीय समाज के अभिव्यंजक हैं।

मन्नू भंडारी की रचनाधर्मिता के संबन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता मेरे मन में विशेष जागृत हुई तो तदर्थ मैंने लेखिका से पत्रव्यवहार द्वारा संपर्क भी जोडा तो अत्यन्त उदारतापूर्वक मन्नू जी ने मुझे पत्रोत्तर द्वारा अनुगृहीत किया। तब वे उज्जैन के प्रेमचन्द्र विद्यापीठ के निर्देशक के रूप में काम कर रही थीं।

मन्नू जी के कृतित्व पर शोधाध्ययन करने के संबन्ध में गुरुवर डॉ. एन.के जोसफ जी (शोध निर्देशक एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग, सेंट थॉमस कॉलेज पाला, केरल) से भी विचार विमर्श किया तो उन्होंने इस विषय को शोध कार्य केलिए उपयुक्त बताया और फिर मेरे मार्ग निर्देशक बनने की सहमति भी प्रदान कर दी। मेरे शोध विषय का महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम, केरल में पंजीकरण हो गया।

मेरे शोध प्रबन्ध का अनुसंधेय विषय है - **'मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में बदलते भारतीय समाज का स्वरूप - मध्यवर्ग जीवन के विशिष्ट सन्दर्भ में'** - जिसकी एक सीमा है बदलते समाज, दूसरी है मध्यवर्ग जीवन। आधुनिक विज्ञान के युग में समाज, परिवार और मनुष्य के जीवन को समझने के लिए इस प्रकार का अध्ययन अनिवार्य है।

महिला लेखन के सन्दर्भ में मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के विविध आयामों पर शोध अध्ययन विविध विश्वविद्यालयों में अवश्य हुआ है, परंतु मध्यवर्ग जीवन के बदलते स्वरूप के विशिष्ट सन्दर्भ में मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का विशेष शोधाध्ययन अभी तक पर्याप्त रूप में नहीं हुआ है। इस क्षतिपूर्ति को विशेष ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोधाध्यन का प्रयास हुआ है, जो इस दृष्टि से मौलिक भी है। भारतीय मध्यवर्ग नितांत विशिष्ट और संकीर्ण है।

बदलते परिवेश में मध्यवर्गीय नारी-जीवन नई चुनौतियों और दिशाओं के सम्मुख बेचैन तथा प्रश्न संकुल है। उपर्युक्त भूमिका में आलोच्य लेखिका की रचनाधर्मिता की पहचान - परख निश्चय ही साहित्यानुशीलन को नई दिशा देने केलिए प्रेरणादायक सिद्ध हो सकती है।

प्रस्तुत शोधपरक अध्ययन, निष्कर्ष के अतिरिक्त पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में सामाजिक चेतना का विकास एवं मध्यवर्ग के उदय आदि का स्पष्टीकरण किया गया है। यूरोप में मध्ययुग के आखिरी चरण में जो नवोत्थान हुआ उसके फलस्वरूप विभिन्न आर्थिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों से एक नया वर्ग समाज में उत्पन्न हुआ जिसे मध्यवर्ग की संज्ञा दी जा सकती है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी का कथन यहाँ उल्लेखनीय है कि मध्ययुग के सामंती समाज का अंत होने पर जब मध्यवर्ग की सत्ता स्थापित हो रही, उसी समय उपन्यास रूपी साहित्यांग का आविर्भाव हुआ। इस प्रकार उपन्यास एक ओर गद्य साहित्य के निर्माण और विकास का समकालीन है तो दूसरी ओर यह मध्यवर्ग के उत्थान का समसामयिक है। यही उसकी साहित्यिक और सामाजिक स्थिति की आधार-शिला है। अतः कहा जा सकता है कि चाहे उपन्यास हो, चाहे कहानी, मध्यवर्ग को केन्द्र में रखकर उसकी संरचना हुई है।

मध्यवर्ग 'मिडिल क्लास' शब्द का प्रथम प्रयोग इंग्लैंड में १८१२ में हुआ था। १८३१ में 'स्पेक्टटेर' पत्रिका में 'बौमान' नामक लेखक ने इस वर्ग को देश का 'धन' और 'मस्तिष्क' के रूप में चित्रित किया। भारत में विशिष्ट अर्थ में इस मध्यवर्ग का उदय अंग्रेज़ों के शासन और शिक्षा प्रचार के साथ ही हुआ। इसके बारे में मेकाले ने बताया है - "हमें एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना

चाहिए जो कि हमारे और जनता के बीच दुभाषिया का काम करें, यही नहीं वह देखने में भारतीय हो और रुचि, बुद्धि आदि में अंग्रेज़ बने।' (We must do our best to form a class who may be interpretors between us and the millions of whom we govern, a class of persons, Indian in blood and colour, but English in taste and opinions, in morals and in intellect. Quoted - Modern India, Vipin Chandra P. 121) मध्यवर्ग का उदय, सामाजिक बदलाव, सामाजिक चेतना आदि ही प्रथम अध्याय का प्रतिपाद्य है। साहित्य में बदलाव का मतलब या तो समाज का विकसित होना या उसका विकृत होना माना जाता है। सामान्यतया 'बदलाव' का तात्पर्य एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाना है। आज़ादी के बाद सन् पचास तक और पचास से साठ तक, साठ से सत्तर तक और उसके आगे आज तक राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दृष्टियों से अनेक परिवर्तन भारतीय समाज में हुए। इन परिवर्तनों को मन्नू भंडारी जी जैसे कथाकार ने अपने अनुभवों के आधार पर प्रस्तुत किया है। सामाजिक चेतना के उदय और विकास के विविध आयाम यहाँ दृष्टिगोचर होते हैं। हिन्दी कथा साहित्य में सामाजिक चेतना के आविर्भाव की भूमिका में महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रतिबिंबित सामाजिक चेतना को स्पष्ट करने का प्रयास प्रथम अध्याय में किया गया है।

द्वितीय अध्याय में मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत करते हुए उस सामाजिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला गया है जिसने मन्नू भंडारी के कथा साहित्य को प्रभावित किया है। सन् १९३१ में मध्य प्रदेश के भानपुरा में पैदा हुई और पली-बढ़ी लेखिका को लेखन संस्कार पैतृकदाय के रूप में प्राप्त है।

स्वयं मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी, भानपुरा से पढाई एवं नौकरी केलिए कलकत्ता चली गयी मन्नू जी ग्रामीण एवं शहरी जीवन की वास्तविकताओं से परिचित थीं, जिसका चित्रण उनके समस्त कथा साहित्य में मिलता है। उनके कथायात्रा के आरंभ तथा विकास पर प्रकाश डालते हुए उनकी संपूर्ण कृतियों पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार किया गया है।

आगामी तीन अध्यायों में उपजीव्य लेखिका के कथा साहित्य में चर्चित बदलते समाज के स्वरूप का अवलोकन किया गया है। इस दृष्टि से तृतीय अध्याय में उनके उपन्यासों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए परिवार के परिप्रेक्ष्य में स्त्री - पुरुष के विविध रूपों तथा समाज, राजनीति आदि के विभिन्न रुखों का अनुशीलन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में उनकी कहानियों की छान-बीन के साथ साथ उनमें अभिव्यक्त परिवार, समाज एवं व्यक्ति की विशेषताओं का विवेचन करते हुए बदलते हुए भारतीय समाज की चुनौतियों और कमज़ोरियों को प्रस्तुत करने की लेखकीय क्षमता का निरूपण किया गया है। अंतिम पाँचवें अध्याय में सांस्कृतिक, समाज-शास्त्रीय एवं संवेदना की दृष्टि से मन्नू जी के कथा साहित्य में निरूपित सामाजिक पक्ष का समीक्षात्मक अध्ययन पेश किया गया है।

करीब चार साल तक मन्नू जी के कथा साहित्य का अध्ययन करने के बाद सोचा कि लेखिका से भेंट होना अत्यन्त वांछनीय बात है। खत एवं फोन के द्वारा उनसे संपर्क स्थापित करके १९९८ अप्रैल में दिल्ली गयी। १६ अप्रैल १९९८ को मन्नू जी के घर पर उनसे साक्षात्कार हुआ (हाऊस घास एपार्टमेंट्स) तीन घंटे उनके साथ बिताने का सुअवसर प्राप्त हुआ। किसी औपचारिकता के बिना उन्होंने मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये। मुझे लगा कि वर्षों बाद मैं अपनी माँ

के पास बैठी हूँ। ठीक वैसी ममतामयी वाणी में उन्होंने मेरे सन्देहों को दूर कर दिया। उपन्यास 'आपका बंटी', 'महाभोज' तथा कहानियाँ 'खोटे सिक्के', यही सच है, 'त्रिशंकु' आदि के कथापात्रों के प्रत्यक्ष अनुभव के बारे में उन्होंने मुझसे विस्तार से बताया। १९८६ के बाद लेखन क्षेत्र से ज़रा अलग रहने का कारण भी उन्होंने बताया। मन्नू जी ने कहा कि बीमारी एवं दवाओं ने मेरे दिमाग को सुन्न बना दिया है। दूसरी बात तो यह है कि आज के 'दर्शन माध्यमों' ने पाठकों की संख्या को कम कर दिया है। ऐसा लगा कि वे इस बात से दुःखी हैं कि नई पीढ़ी के मन में हिन्दी भाषा के प्रति लगाव तो कम होने लगा है।

करीब दस साल के अन्तराल के बाद १९९७ में 'इंडिया टुडे' के साहित्यिक वार्षिकी में उनकी एक कहानी ('नमक') प्रकाशित हुई। उसका परिचय भी उन्होंने दिया। फिर उसी साल 'समकालीन भारतीय साहित्य' में छपी उनकी आत्मकथा के पहले भाग के बारे में भी बताया। मन्नू जी से हुए साक्षात्कार का एक अंश मैंने 'शोध क्षितिज' नामक शोध पत्रिका में 'साक्षात्कार मन्नू भंडारी से' नाम से प्रकाशित किया है। शेष का इस शोध प्रबन्ध में जगह-जगह पर उल्लेख किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष के रूप में निम्न लिखित बातों की ओर इंगित किया गया है। यद्यपि मन्नू जी की रचनाओं में नारी पक्ष की ओर झुकाव दृष्टिगत है, तो भी वे घोर नारीवादी नहीं हैं। जब प्रायः सभी लेखिकाएँ नारी की समस्याओं में ही डूबती रहीं, तब मन्नू जी ने अपनी व्यापक दृष्टि के साथ 'पूर्ण मानव' को अपनी रचनाओं के केन्द्र में रखा है। मन्नू जी ने प्रचार तथा नारेबाजी से अलग होकर सशक्त रूप में आज की राजनीति के खोखलेपन

को 'महाभोज' नामक उपन्यास तथा 'मैं हार गई', 'हार' जैसी कहानियों के द्वारा प्रकट करने का प्रयास किया है।

नैतिकता संबन्धी दृष्टिकोण भी उनका अपना था। सामाजिक बंधनों को तोडने की इच्छुक नारियों का चित्रण उन्होंने १९६० के आसपास ही किया। लगभग चार दशकों तक अपनी प्रतिभा के द्वारा भारतीय समाज के परिवर्तन को उन्होंने ज्यों का त्यों उतारा है जैसे - संयुक्त परिवार का विघटन, 'अणु' परिवार का उदय, पारिवारिक विघटन, विघटित परिवार के बच्चों की मानसिक स्थिति, अकेलेपन से ग्रस्त वृद्ध कथा पात्र, राजनीति की असलियत, शोषक शोषित आदि समाज के विभिन्न पक्षों का वर्णन करने का प्रयास मन्नू जी ने किया है।

एक साहित्यकार के रूप में मन्नू जी की शैली एवं भाषा में हुए परिवर्तन भी उपस्थित करने का प्रयास किया गया है। उनकी समकालीन एवं समानधर्मी कुछ मलयालम लेखिकाओं से तुलना करके उनके विचार में जो समानता एवं भिन्नता दिखाई पडती है उसको भी प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है।

इस शोध प्रबन्ध का प्रमुख प्रयोजन तो यह रहा है कि १९५० के बाद के भारतीय समाज के जिस स्वरूप को मन्नू जी ने संवेदना के स्तर पर उठाया है, उसका अध्ययन समाजशास्त्रीय आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है। मन्नू भंडारी के संपूर्ण कथा साहित्य का अध्ययन मध्यवर्गीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में करने का प्रयास हुआ है। एक कथाकार की दृष्टि से मन्नू जी की संवेदना की विशिष्टताओं की तलाश भी इस अध्ययन में संलग्न है।

अंतत : शोध निर्देशक परमादरणीय डॉ. एन. के. जोसफ जी के प्रति श्रद्धावनत हूँ, जिन्होंने पग-पग पर मेरा कुशल मार्ग-दर्शन किया है। रायबेरली के 'महात्मा गाँधी' कॉलेज के प्राचार्य डॉ. धर्म ध्वज त्रिपाठी जी, मुम्बाई के 'हिन्दी सेवी सत्रक' पत्रिका के संपादक आचार्य अखिल विनय जी, कलिकट विश्वाविद्यालय के मेरे गुरुवर डॉ. आर सुरेन्द्रन जी (आरसु), डॉ. टी. एन. विश्वंभरन जी एवं सेंट थॉमस कॉलेज, कोषंचेरी के आदरणीय आचार्य तथा भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं मेरे गुरुजन प्रो. के. एम. वरगीस जी और प्रो. एम.टी. कोशी जी की भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय समय पर बहुमूल्य सुझाव दिए हैं। जिस प्रकार मन्नू जी को अपने पति, हिन्दी के मशहूर कथाकार और 'हंस' पत्रिका के संपादक श्री राजेन्द्र यादव जी से कदम कदम पर अपनी साहित्य रचना में जो प्रेरणा एवं सहयोग मिला है, उसी प्रकार मुझे भी अपने जीवन साथी अब्रहाम मैथ्यु जी, जो मलयालम के अधुनातन कहानीकार तथा 'मातृभूमि' समाचार पत्र के मुख्य सह संपादक हैं - से भी आवश्यक सहयोग मिला है। उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। अपने पूज्य माता-पिता, गुरु जन एवं सहयोगियों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना यह शोधकार्य अधूरा ही रहता।

षीना ईपन

सेंट थॉमस कॉलेज, पाला